काव्य संग्रह : मेरे अपने राम

सं. डा. अरविंद गुप्ता, संस्थापक, राष्ट्रीय चेतना परिवार, बेंगळूरु
श्रीमति **अनीता तोमर "अनुपमा",** श्रीमति जयश्री राजू
प्रकाशक : वर्तमान अंकुर, गौतम बुद्ध नगर,
प्रशासन संस्था : राष्ट्रीय कवि संगम, बेंगलुरू
समीक्षक : दर्शन 'बेज़ार', आगरा

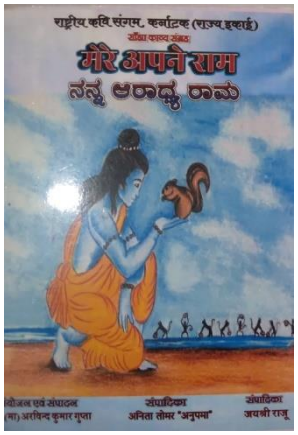

एक साहित्यिक आयोजन में प्रभु राम के जीवन चरित्र को समाहित करती हुई कविताओं को संग्रहित की गई पुस्तक मेरे अपने राम इस पुस्तक के संयोजक एवं संपादक अरविंद कुमार गुप्ता ने मुझे अध्ययन हेतु भेंट की है, किंतु मैं इस अनुपम पुस्तक के केवल पठन-पाठन तक ही सीमित नहीं रहा अपितु जितना मैं समझ सका और ग्रहण कर सका वह एक आलेख में चित्रित करने से रह न सका । मेरे अपने राम काव्य संकलन में हिंदी की कविताएं तथा कन्नड़ भाषा के विद्वान साहित्य सेवियों की रचनाएं संकलित हैं। हिंदी कविताओं के संपादन की बागडोर बहन अनीता तोमर अनुपम ने संभाली है, तो कन्नड़ की कविताओं का संकलन विदुषी बहन जय श्री राजू ने अपने हाथ में ली है। कन्नड़ भाषा का ज्ञान न होने के कारण मैं अपना कथन केवल हिंदी पक्ष की सीमित रख रहा हूँ।

अपने संपादकीय आलेख में अरविंद कुमार गुप्ता समाज की व्यवस्था को उचित और सुंदर बनाने के लिए त्याग समर्पण कर्तव्य निष्ठा निडरता विनम्रता सदाचार के मूल्य की स्थापना के प्रभु राम को सर्वव्यापी माध्यम मानते हैं और कहते हैं कि-- जब तक पृथ्वी पर सभ्यता एवं संस्कृति रहेगी तब तक प्रभु रामचंद्र जी का गुणगान होता रहेगा और कवियों की शाश्वत लेखनी अविरल सृजन करती रहेगी।

इस संकलन में देश भर के २७ कवि-कवयित्रियों ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय कुछ इस प्रकार दिया है-

प्रथम कवयित्रि **सुलेखा कुलश्रेष्ठ** से प्रारंभ इस संग्रह में सुलेखा उनके जन्म का वृतांत इस तरह चित्रित करती हैं

> दशरथ जी बेचैन व्याकुल बेहाल थे।
>
> तीन विवाह के पश्चात भी वह निसंतान थे ।

पुत्र हुए चार क्षत्रियों की आन बान शान ।

अयोध्या में आनंद छा गया , हमारा राम आ गया।

प्रतीक पालोड ने राजाभिषेक का मनोहारी चित्रण कुछ इस प्रकार किया है--- श्री राम लला के छत्र चढ़ा है, भारत का है मन बड़ा।

जले दीप गणित मन मंदिर में, अवधपुरी उत्सव है बड़ा।।

गोरखपुर के नंदलाल मणि त्रिपाठी पीतांबर मर्यादाओं की भीड़ में मर्यादा को खोजते हुए साकेत के श्री राम को लाते हैं और दया धर्म दान ऋषि कुल वैराग्य विज्ञान के राम के युग को साकार करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

डॉ. मल्काप्पा इलियास महेश के मन में राम बसे हैं धड़कन में राम बसे हैं वे राम नाम में वीणा मां का जय घोष भी देखते हैं और एक सूत्र में राम नाम जपते हैं और राम राज्य की स्थापना साकार करते हैं।

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश की पूजा शर्मा बहुत ही सहज भाव से राम से साक्षात्कार करती हैं। अनेकों जिज्ञासा है पूजा शर्मा के मन में राम के जन्म से लेकर सरयू की लहरों में समा जाने तक। आदित्य शुक्ला अपने जीवन को राघव के हवाले करते हुए कहते हैं कि --- शबरी जैसा समर्पण नहीं है उनमें और पापों की कालिख से बचने के लिए राम से धवल बन जाने की विनय करते हैं। हर संकट सहने की शक्ति मांगते हैं ।

डॉ. मंजु गुप्ता 'लता' बड़े ही सहज शब्दों में प्रभाती के माध्यम से कौशल्या माता द्वारा रामलाल को जगाने दुलारने का चित्रण करते हुए राम युग लाने के लिए संकल्पित है और नई पीढ़ी को राम के आदर्श पर चलने का आव्हान करते हुए कहती हैं-- सबसे पहले परिवार में माता पिता का आधार हो।

गुरु की गरिमा सतत् पूज्य हो और अभिनंदन सादर हो ।

मृदु गति छंद से सृजित रचना शीर्षक 'आप ही हमारे' बहुत ही विनम्र शब्दों में राम से निवेदन करती हैं---

हे नाथ आप आकर इस देश को संभालो ।

पापी बड़े-बड़े हैं उनसे हमें बचालो ।

सीता लखन सहित अब आओ अवधपुरी में ।

कुछ गीत बज उठाएंगे जीवन की बांसुरी में।

इससे आगे वह हाकली छंद में जय श्री राम का जाप इस प्रकार करती हैं--

घर-घर कितने दीप जले।

लाखों साधु संत चले। मंगल बेला आई है। घर-घर रौनक छाई है।

मधुबनी श्रीधर के सावन कुमार की प्रभु राम के साथ-साथ नंद गोपाल कैलाशपति मां वैष्णो देवी का आव्हान करते हुए संसार के उद्धार के लिए बहुत ही चिंतित हैं।

मिलिंद यादव हृदय से पुकारते हैं

तारों तारों भव को तारो, तेरा ही नाम प्रभु त्राहिमाम।

राम के वन गमन करते ही अयोध्या नगरी की निरीहिता का चित्रण करते हैं --

मरुभूमि सी बंजरा

ऊसर प्रतीत अवध की नगरी,

राम लखन सीता के बिना शून्य सी अयोध्या नगरी।

कवित्री **प्रोफेसर शांति कोकिला** अपनी रचना राम की महिमा का गायन इस प्रकार करती हैं--

धर्म सत्य पर आधारित हो ज्ञान हो निर्मल गंगा जैसा

भूख प्यास की पीड़ा न हो हर मानव हो मानव जैसा।।

चित्रकूट में राम सीता के प्रवास को इन शब्दों में प्रस्तुत करती हैं प्रोफेसर शांति कोकिला जी ---

चित्रकूट पर चित्र लिखे से खग मृग मन हारते हैं। फल खाकर तृण चर जल पीकर
मोदाम्बुधि में तरते हैं ।

राम भरत का वार्तालाप भी प्रोफेसर शांति

कोकिला ने मनोहर शब्दों में चित्रित किया है।

संभाल के हरि कृष्ण गुप्ता ने श्री राम केवट संवाद को बहुत ही सारगर्भित रूप से चित्रित किया है। अवध में राम के जन्म का वर्णन भी मनोहर ढंग से उल्लेखित किया गया है। संसार में बढ़ रहे पापों की मुक्ति के लिए अपनी कविता विनीती में वे लिखते हैं--

बढ़ जाते हैं पाप दुनिया में जब कभी कभी।

लेते हैं जन्म भी श्री राम तभी तभी ।

काव्य संग्रह 'मेरे अपने राम' के संयोजक तथा प्रधान संपादक डॉ. अरविंद कुमार गुप्ता ने राम के जीवन से जुड़े हुए अनेकों प्रसंग लेखनीबद्ध किए हैं। प्रभु राम की कथा भले ही लंबाई में कुछ अधिक प्रतीत हो किंतु वह एक के बाद एक घटनाओं को सारपरक लेखन से समेटते हुए आगे बढ़ते हैं और वनवास के उपरांत अवधपुरी में लौटकर जब प्रवेश करते हैं तब अवध प्रजा की प्रसन्नता का सुंदर बखान करते हैं

राम मय हो गई अयोध्या को समापन निम्नवत करते हैं ---

प्रभु कीजिए अपनी कृपा अब हमें भी दर्शन दीजिए ।

कर कृपा अब हम पर अपने उद्धार हमारा कीजिए।

रंजीत कुलश्रेष्ठ के मन में तो राम धुन समाई हुई है वह और कुछ नहीं गा सकती। वे भक्तों की टोली बनाकर राम का नाम लेकर चल पड़ी हैं----

चलो बनायें भक्तों की टोली ,लेकर प्रभु का नाम।

जो भी लेता नाम राम का, बन जाते हैं काम।।

डॉ. बी निर्मला भी राम नाम की महिमा में अपने आप को तल्लीन पातीं हैं ---

राम नाम की माला जपने से मन हो जाता निर्मल

मिट जाती हर गंदगी धुल जाते सब पाप।

दो अक्षर राम नाम में वह प्रकृति के कण-कण को जीवन्त देखती हैं ।

उत्तर भारत की प्रसिद्ध लोकगीत गायिका और कवयित्रि **सुनीता सैनी** अपनी रचना कौशल्या के लाल से सुरीली तान देती हैं ---

कौशल्या का लाल फिर खेलेगा भवन में

दशरथ भवन में अवध भवन में ।

पीला पटका धोती सिल्क की सिलवाएगा,

तीर कमान नवी बाढी से बनबावेगा ।

विनोद कवात्रा राम नाम जपु राम नाम जप भवन में--- सभी मर्यादाओं का समावेश मानते हैं। केवट के उद्धार के प्रसंग को बहुत ही सुंदर ढंग से वर्णित किया है -

भूल न जाना भूल न जाना, मुझको भगवान भव से पर लगाना।

हिंदी के विभिन्न छंदों की मर्मज्ञ विदुषी **उर्मिला श्रीवास्तव 'उर्मी'** आल्हा छंद का सफल प्रयोग करके राम कथा प्रस्तुत करती हैं। इन कविताओं को पड़ेगें तो पढ़ते ही चली जाएंगे। राम का" राम वनवास सरयू पार पंचवटी प्रवाह, राक्षससंहार को बहुत ही सुंदर क्रम से लिखा है उर्मिला जी ने। राक्षससंहार पर वह लिखती हैं---

दैत्य का आतंक बहुत था,साधु संत संकट मे राम

संत समाज हुआ अति हर्षित , निश दिन महिमा गाते राम ।।

डॉ वासुदेव "शेष" घर-घर में मचे हुए कोहराम, रक्त रंजित धारा को देखकर प्रभु राम से सीधे संवाद करते हुए कहते हैं ---

लूट खसोट की बयार बही है ,कर देते तुमको बदनाम ।

कब आओगे राम?

इससे आगे **डॉक्टर वासुदेव तुलसी दास** की भक्ति की भूरि- भूरि प्रशंसा करते हुए उन्हें कवी ही नहीं संत की उपमा देते हैं ।

कवि प्रेमेंद्र नाथ मिश्रा भी राम नाम की महिमा का वर्णन ही नहीं ताड़का वध के प्रसंग को जिन शब्दों में प्रस्तुत किया है उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है---

जिसमें तिल भर भी धर्म नहीं वह नर हो या हो नारी।

उसका वध धर्म निहित है जो दुष्ट हो और दुराचारी।।

डॉ मंजु रूस्तगी अपनी कविता में जय सियाराम कहती हुई बड़े ही आदर भाव से प्रभु का स्मरण करती हैं--- मनुज पर आन पड़ा है संकट कुदरत बदल रही है करवट ।

एक बार सब तुम्हें पुकारे आओ सबके प्यारे राम।।

कृष्ण कुमार शर्मा "सुमित" अपनी रचना 'सुनो सुनाएं एक कहानी में ' अयोध्याधाम में कालचक्र की गति का बहुत मार्मिक वर्णन करते हैं।

विनीता शर्मा ने भी भगवान राम की अलौकिक जीवन लीला को बहुत ही मर्मस्पर्शी शब्दों में उकेरा है।

रूपा त्रिवेदी की कविता 'हम द्वार- द्वार दीप जलाएंगे' में अपनी आस्था की नई स्वतंत्रता के रूप में देख रहीं हैं ।

संपादिका अनीता तोमर "अनुपमा" की कविता जय श्री राम बहुत ही हृदय स्पर्शी है। राम रूप की जो धूप है, सीता के अंतर्मन में उतर गई ।

शत् सूर्य प्रभा सम ज्योतिर्मय जीवन तमस वो हार गई ।।

इसी क्रम में आगे बढ़ते हैं तो **मनोज कुमार चतुर्वेदी** लिखते हैं-- कीर्ति का उद्घोषक का प्रबुद्ध गीत गूंज चुका है। राम राम सिया राम नाद अब हो चुका है।

प्रोफेसर माधुरी राजीव क्षीरसागर पुष्प वाटिका सहित शिव धनुष खंडन का मार्मिक चित्रण करती हैं। पुष्प वाटिका में भी पुष्प आनंद से खिलखिला गए।

सहज उठाई चढ़ाई प्रत्यंचा हुई गर्जना।।

डॉ. सौम्या सी. डी. हृदय में राम के विराजमान होने पर अत्यंत आह्लादित दिखाई देती हैं--

जितना भी जन्म पावै मन में ठान लेना है।

दुनिया में लोग अनेक है किंतु सबके राम एक हैं।

इस प्रकार २७ कवियों कवयित्रियों द्वारा सृजित यह संग्रह मेरे अपने राम की सभी रचनाएं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत हुई हैं और सभी रचनाकारों ने अपनी-अपनी आस्थानुसार अपने भाव पिरोए हैं। यह संग्रह सभी पाठकों के हृदय में स्थान बनाएगा ऐसी आशा है ।

दर्शन बेज़ार
आगरा

समीक्षक परिचय :

नाम : दर्शन 'बेज़ार'
पूरा नाम: दर्शन प्रकाश कुलश्रेष्ठ
जन्म तिथि: 22 नवंबर 1948
जन्म स्थान: ग्राम पचगाईं खेड़ा जनपद आगरा उत्तर प्रदेश
पिता: स्व ० श्री नौरंगीलाल
माता: स्व ० श्रीमती सुशीला देवी
शिक्षा: बी० एससी० ,बी० ई० (Mechanical Engg)
व्यवसाय: उत्तर प्रदेश सार्वजनिक निर्माण विभाग से अधिशासी अभियंता पद से नवंबर 2008 में सेवानिवृत्त

साहित्यिक परिचय: देश मे व्याप्त असंतोष जनित तेवरी आंदोलन मे लगभग 40 वर्ष पूर्व में सम्मिलित होकर सम्वेदनशील नगर अलीगढ़ मे स्थानीय छात्र समूह के साथ साहित्यिक जनजागरण में सक्रिय भूमिका निर्वहन , ग़ज़ल के समानांतर तेवरी विधा के उन्नयन हेतु एक सिपाही के रूप में समर्पित और कुव्यवस्था के विरोध में साहसिक लेखन प्रक्रिया मे लीन कलमकार

प्रकाशन:

तेवरी संग्रह (1) एक प्रहार लगातर (1985)* (2) देश खण्डित हो न जाए (1989)*
(3) ये जंजीरें कब टूटेगी(2010)* , (4) खतरे की भी आहट सुन (2023)*

गीत ग़ज़ल संग्रह : तोड़ पत्थरों को भागीरथ (2011)

पचगाईं दर्पण (पैतृक गांव के इतिहास का संकलन 2011)

वर्तमान में आगरा, बैंगलोर में प्रवास तथा तेवरी विधा के प्रचार प्रसार हेतु निरंतर लेखन **

****

पुस्तक मेरे अपने राम के समीक्षक आदरणीय भाई दर्शन बेजार जी का हम लोग हृदय से आभार व्यक्त करते हैं । जिन्होंने सभी साहित्यकारों की रचनाओं की इतनी सुंदर सटीक समिक्षा की है। आज के इस युग में जहाँ हम लोग अन्य की रचना नहीं पढ पाते वहीं इतने वरिष्ठ साहित्यकार तेवरीकार आ० दर्शन बेजार जी ने पूरी पुस्तक का गहनता से पठन किया है। वास्तव में वह हिंदी भाषा के प्रति समर्पित साहित्यकार है।

मेरे अपने राम पुस्तक की समीक्षा पढकर सभी रचनाओं का मूल तत्व ज्ञात होता है। कवियों की लेखनी का ज्ञान होता है। सीखने को मिलता है।

किसी भी पुस्तक की समीक्षा उसका कद बढ़ा देती है। इस पुस्तक में आ० अरविंद भाई एवं संचालक मंडल के सभी लोगों का अकथनीय प्रयास और श्रम अत्यंत सराहनीय है। सभी कर्मठ साहित्यकारों को हार्दिक बधाई। प्रबुद्ध कुशल समीक्षक भाई आ० दर्शन बेजार जो को नमन करते है। जय श्री राम।

🙏🙏

उर्मिला श्रीवास्तव 'उर्मि'

दिनांक 25/2/2025